पंचम अध्याय

हिंदी उपन्यास साहित्य में वर्णित शिवाजी के चरित्र चित्रण का साहित्यिक सौन्दर्य --

१) आकृति वेशभूषा वर्णन

२) अनुभाव चित्रण

३) काल्पनिक घटनाओंद्वारा चरित्र-चित्रण

अ) काल्पनिक घटनाओंका चरित्र-चित्रण में स्थान

४) अलंकारों द्वारा चरित्र-चित्रण

५) ध्वन्यात्मक प्रणाली से शिवाजी का चरित्र-चित्रण --

अ) शौर्य एवं वीरता

आ) नैतिकता

इ) वैभव

मूल्यांकन

पंचम अध्याय

हिंदी उपन्यास साहित्य में वर्णित शिवाजी के चरित्रचित्रण का साहित्यिक सौंदर्य ----

साहित्य में भाव की जितना महत्व होता है, उतना ही महत्व साहित्यिक सौन्दर्य की भी होता है । ऐतिहासिक साहित्य में साहित्यिक सौन्दर्य का प्रभाव कम होता है । इसका कारण यह है कि ऐतिहासिक साहित्यकार को इतिहास की रक्षा करनी पडती है । फिर भी ऐतिहासिक साहित्यकार ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तियों का चित्रण करते समय कल्पना का आश्रय लेता है । उसमें उनकी कला दिखाई देती है ।

(१) आकृति वेशभूषा वर्णन ---

हिंदी उपन्यासकारोंने शिवाजी का चित्रण करते समय उनकी आकृति वेशभूषा और रूपवर्णन किया है । उपन्यासकार यादवचंद्र जैन लिखते हैं .... ' तभी सामने से एक मुस्कराता-सा नाटा सा मराठा जवान -- तलवार कमर में बाँधे, मुगलिया सरदारों की सी दाढी बढाये , गोरा-चिट्टा, माथे पर रोली का गोल टीका लगाये मराठे सरदारों की सी पगडीनुमा साफा बाँधे सामने आया । ' [१]

यहाँ यादवचंद्र जैन जी ने शिवाजी को एक मूर्त रूपमें पाठकों के सामने खडा करने का प्रयत्न किया है । ऐतिहासिक व्यक्ति का मूर्त चित्रण साहित्यिक अपनी कला से करता उसमें उस साहित्य की सौंदर्यता दिखाई देती है ।

(२) अनुभाव चित्रण ---

उपन्यासकारों ने अपने साहित्य के सौंदर्य बढाने के लिए अनुभाव का चित्रण किया है । अनुभाव के अंतर्गत शोक, क्रोध, चिंता और भय आदि भावों

का चित्रण रहता है । आ.चतुरसेन शास्त्री शोक भाव का चित्रण करते समय लिखते हैं ....' वह निश्चल मूर्ति सैकडों घाव छाती और शरीर पर खाकर वीरासन से विराजमान थी । महाराज की आँखों से टपाटप आंसू गिरने लगे । उन्होंने शोक कम्पित स्वर में कहा --- गढ आया, पर सिंह गया ।' [२]

यहाँ आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने शिवाजी जैसे वीर पुरुष की आँखों में आंसू दिखाकर शिवाजी के भावुक हृदय का परिचय दिया है । तानाजी मालुसरे ने अपनी जान की बाजी लगाकर कोंडाणा जीत लिया यह वर्णन इतिहास में मिलता है । लेकिन साहित्यकार शिवाजी की आँखों में आंसू दिखाकर शिवाजी की आत्मीयता प्रकट करता है । यही साहित्य का सौंदर्य होता है ।

(३) काल्पनिक घटनाओं द्वारा चरित्र चित्रण ---

ऐतिहासिक उपन्यास में कल्पना होती है । मूल इतिहास को न बदलकर कल्पना का सहारा लेने का अधिकार उपन्यासकार को होता है । हिंदी उपन्यासकारों ने कुछ काल्पनिक घटनाओंका चित्रण किया है ।

(अ) काल्पनिक घटनाओंका चरित्र- चित्रण में स्थान ---

किसी भी ऐतिहासिक व्यक्ति का चरित्र-चित्रण इतिहास की कसौटीपर खरी होनी चाहिए । लेकिन कुछ काल्पनिक घटनाओंका आधार भी साहित्यकार लेता है । लेकिन प्रश्न यह निर्माण होता है - काल्पनिक घटनाओंका चरित्र-चित्रण में क्या स्थान होना चाहिए ? उपन्यासकार कुछ काल्पनिक घटनाओंका चित्रण करते हुये अपने साहित्यिक सौन्दर्य को बढाता है । इसलिए उपन्यासकारको इतिहास का हानि न करते हुये काल्पनिक घटनाओंका प्रयोग करना चाहिए ।

हिंदी उपन्यासकारों ने भी शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय

काल्पनिक प्रसंगों का सहारा लिया हैं । परमेश्वर प्रसाद सिंह ने कहा हैं --- शिवाजी की देश, धर्म और भक्ति की ओर आसक्ति थी । वे देश और धर्म को महत्व देते थे । इसके प्रमाण के लिये परमेश्वर प्रसाद ने काल्पनिक उदाहरण देते हुए लिखा हैं --- ' देखो अपनी आँखों से अपनी दुर्दशा देखो -- याद रखो, जल में निवास करनेवाली मछली, दूध में निवास नहीं कर सकती । यदि दुश्मन तुम्हें दूध का लोभ देता हैं, तो समझो कि वह विष हैं, अमृत नहीं । जिसप्रकार जल में निवास करनेवाली मछली जलमें ही आनन्द पूर्वक जीवन यापन कर सकती हैं, उसी प्रकार जिस देश में तुम्हारा जन्म हुआ हैं, जिस जाति में तुम्हारा जन्म हुआ हैं, और जिस धर्म में तुम्हारा जन्म हुआ हैं, उसी देश, जाति और धर्म के अन्तर्गत तुम्हारा जीवन सुखी रह सकता हैं ।' [3]

यहाँ परमेश्वर प्रसाद ने मछली और पानी का सम्बन्ध जितना घनिष्ठ संबंध होता हैं । उतना ही सम्बन्ध व्यक्ति और उसके देश का होता हैं । यहाँ मछली और उसके प्राकृतिक स्थान पानी का उदाहरण देकर परमेश्वर प्रसाद ने उपन्यास में सौन्दर्य निर्माण किया हैं । इस उदाहरण से छत्रपति शिवाजी महाराज का चरित्र और भी उज्वल दिखाई पडता हैं ।

(४) अलंकारोंद्वारा चरित्र-चित्रण --

जैसे स्त्री के सौन्दर्य का प्रतीक गहना समझा जाता हैं, उसीप्रकार साहित्य का गहना अलंकार को समझा जाता हैं । उपन्यासकारों ने भी शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय अलंकारों का निर्माण किया हैं । उपन्यासकार मनहर चौहान लिखते हैं .... ' शिवाजी का कद छोटा था और वे पहाडों में रहते भी थे, इसलिए उसने उन्हें ' पहाडी चूहा ' नाम दे रखा था । क्रोध से बुदबुदाया ', इस चूहे का कचूमर न निकाला तो मेरा नाम औरंगजेब नहीं । पहले मैं दिल्ली पहुँचूं, फिर देखूँगा ।' [4]

यहाँ मनहर चौहान ने शिवाजी को चूहे की उपमा दी हैं । शिवाजी

जब औरंगजेब के अनेक भागों में विजय हासिल करने लगा तो औरंगजेब ने शिवाजी को पहाडी चूहा कहा हैं ।

मनहर चौहान ने इस कथन से उपमा अलंकार का निर्माण किया हैं । अलंकारों मे साहित्यिक सौंदर्य बढाया हैं ।

(५) ध्वन्यात्मक प्रणाली से शिवाजी का चरित्र - चित्रण --

हिंदी उपन्यासकारों ने छत्रपति का चरित्रचित्रण ध्वन्यात्मक प्रणाली के आधारपर भी किया हैं । साहित्यिक सौंदर्य को बढाने के लिए उपन्यासकारों ने इस प्रणाली का आधार लिया हैं । इस प्रणाली के अंतर्गत शौर्य, नैतिकता और वैभव आदि गुणों का समावेश होता हैं । हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी का चित्रण करते समय इन गुणों का विवेचन किया हैं ।

(अ) शौर्य एवं वीरता ---

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी के शौर्य एवं वीरता का चित्रण किया हैं । उपन्यासकार मनहर चौहान लिखते हैं '....' शिवाजी को उडने के लिए पंख मिले हुए हैं, इस अफवाह ने पिंजर से जोर पकडा । आगरा से पलायन की यह घटना इतनी अद्भुत व रोमांचक थी कि लोगों ने उसे जादुई कहानी का रूप दे डाला । देश के कोने-कोने में शिवाजी की बुद्धि और वीरता का दबदबा हो गया ।' [५]

मनहर चौहान ने साहित्यिक प्रभाव बढाने के लिए शिवाजी को पंख मिल गए हैं, ऐसा भास निर्माण किया हैं । जिससे साहित्य का सौंदर्य बढता हैं ।

(आ) नैतिकता ---

साहित्य का सौन्दर्य बढाने के लिए उपन्यासकारों ने शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय नैतिकता चित्रण ध्वन्यात्मक ढंग से चित्रण किया हैं । नैतिक चित्रण से राजा का व्यक्तित्व श्रेष्ठ ठहरता हैं । छत्रपति शिवाजी महाराज

के नैतिकता का चित्रण करते समय यादवचंद्र जैन लिखते हैं...' जी हाँ । मुझे बहुत अफसोस है कि मेरे सरदारों की नादानी की वजह से आप को इतनी तक्लीफ उठाकर यहाँ तक सफर करना पडा लेकिन यह मेरी खुश-किस्मती है कि आप ऐसी सुन्दरी के दर्शन हुये । काश मेरी माँ ऐसे रंग के निखार पर होती तो कम-से-कम मैं इतना बदसूरत न पैदा होता । मुझे माफ कीजिएगा । जाइये । आप को बाइज्जत ये लोग आपकी पूनपनी के पास कल्याण पहुँचा देंगे ।' [६]

यादवचंद्र जैन ने शिवाजी का चरित्र-चित्रण प्रभावी ढंग से करने के लिए इस प्रसंग को जोडा है । शिवाजी के सेनापति आबाजी सोनदेव ने इस सुन्दरी को भेजा था । पनारस की वह अद्वितीय सुन्दरी कल्याण के सूबेदार मौलाना अहमद की भान्जी थी ।

यादवचन्द्र जैन ने साहित्यिक सौन्दर्य को बढाने के लिए शिवाजी का चित्रण इस ढंगसे किया है ।

(इ) वैभव ---

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय शिवाजी के राज्य में वैभव का चित्रण किया है । उपन्यासकार यादवचन्द्र जैन ने वैभव का चित्रण ध्वन्यात्मक ढंग से करते समय लिखा है....' अच्छा ... यह ठाठ । मामूली जागीरदार की औलाद और ये कालीन ? ये रेशमी झालरदार चादरें ? नाश्ते के ये चाँदी-सोने के बर्तन ? मेरे सामने इतने रुआब दिखाए जा रहे हैं ।' [७]

यादवचन्द्र जैन ने शिवाजी के वैभव का चित्रण किया है । यह प्रसंग अफजलखाँ वध के समय का है । छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्य वैभव से संपन्न था ।

मूल्यांकन ---

ऐतिहासिक साहित्य में साहित्यिक सौन्दर्य के लिए स्थान कम होता है । हिंदी उपन्यास साहित्य में उपन्यासकारों ने शिवाजी चित्रण करते समय

आकृति-वेशभूषा का वर्णन करते हुये साहित्य में सौन्दर्य की निर्मिती कर दी हैं । शिवाजी का चित्रण करते समय अलंकारों की निर्मिती कर दी हैं । शौर्य एवं वीरता, नैतिकता और वैभव का चित्रण करते समय यादवचन्द्र जैन और भगवतीशरण मिश्र ने साहित्यिक सौन्दर्य निर्माण करने का अच्छा प्रयास किया हैं ।

ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य का साहित्यिक सौन्दर्य सामान्य कोटि का हैं । इसमें उच्च स्तर का साहित्यिक सौन्दर्य नहीं मिलता । इसका कारण यह हैं कि हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासकार द्वारा शिवाजी चित्रण नहीं हुआ । इन उपन्यासकारों ने सिर्फ घटनाओं और काल्पनिक घटनाओं के द्वारा चित्रण करने का प्रयत्न किया हैं । इस कारण ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य में श्रेष्ठ साहित्यिक सौन्दर्य नहीं मिलता ।

संदर्भ

१ यादवचन्द्र जैन - शिवनेर केसरी - पृ. २२०-२२१, दिल्ली, प्र.सं. १९५९ ई.

२ आ. चतुरसेन शास्त्री - सह्याद्रि की चट्टाने - पृ. १५५, दिल्ली, दूसरा संस्करण, अगस्त, १९६७ ई.

३ परमेश्वर प्रसाद सिंह - छत्रपति शिवाजी - पृ. ४७, दिल्ली, प्र.सं. १९७० ई.

४ मनहर चौहान - जयभवानी - पृ. ३६, दिल्ली, संस्करण १९७१ ई.

५ मनहर चौहान - जयभवानी - पृ. ९८, दिल्ली, सं. १९७१ ई.

६ यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी - पृ. १७५, दिल्ली, प्र.सं. १९५९ ई.

७ यादवचन्द्र जैन - शिवनेर केसरी - पृ. २००, दिल्ली, प्र.सं. १९५९ ई .